ed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com,



द्रव्यगुण विज्ञान

(द्वितीय भाग)

(राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग के पाठ्यक्रमानुसार)



लेखक

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा
वैद्य मनोज कुमार शर्मा
वैद्य अभिजीत ताराचन्द शर्मा

JAYPEE

अनुक्रमाणिका

द्रव्यगुण विज्ञान द्वितीय भाग (भाग क) (वर्तमान पाठ्यक्रमानुसार)

द्रव्य नाम : अग्निमन्थ (अरणी)....1
द्रव्य नाम : अजमोदा (अजमोद)....2
द्रव्य नाम : अतिविषा (अतीस)....3
द्रव्य नाम : अपामार्ग (चिरचिटा)....4
द्रव्य नाम : अर्जुन (ककुभ)....5
द्रव्य नाम : अशोक (हेमपुष्प)....6
द्रव्य नाम : अश्वगन्धा (असगन्ध)....7
द्रव्य नाम : अस्थि संधारक (अस्थि संहारी)....8
द्रव्य नाम : अहिफेन (अफीम)....9
द्रव्य नाम : आमलकी (आंवला, धात्री)....10
द्रव्य नाम : आरग्वध (अमलतास)....11
द्रव्य नाम : उशीर (खस)....12
द्रव्य नाम : एरण्ड (एरण्डी)....13
द्रव्य नाम : बड़ी इलायची (बृहदेला)....14
द्रव्य नाम : छोटी इलायची (सूक्ष्म एला)....15
द्रव्य नाम : कटंकारी (छोटी कटेरी)....16
द्रव्य नाम : कटुका (कुटकी)....17
द्रव्य नाम : कपिकच्छु (कौंच, आत्मगुप्ता)....18
द्रव्य नाम : कम्पिल्लक (कमेला)....19
द्रव्य नाम : कर्कटशृंगी (काकड़ासिंगी)....20
द्रव्य नाम : काँचनार (कचनार)....21
द्रव्य नाम : **कालमेघ (यवतिक्त)**....22
द्रव्य नाम : कुटज (कूड़ा)....23
द्रव्य नाम : कुमकुम (केशर)....24
द्रव्य नाम : कुमारी (घी कुआँर)....25
द्रव्य नाम : कुलत्थ (कुलथी)....26
द्रव्य नाम : खदिर (खैर)....27
द्रव्य नाम : काश्मरी (गम्भारी)....28
द्रव्य नाम : गुग्गुल (गूगल)....29
द्रव्य नाम : गुडूची (गिलोय)....30
द्रव्य नाम : गोक्षुर (त्रिकंटक, गोखरू)....31
द्रव्य नाम : चक्रमर्द (पवाड़)....32

द्रव्य नाम : रक्तचन्दन (लाल चन्दन)....33
द्रव्य नाम : चन्दन श्वेत....34
द्रव्य नाम : चित्रक (चीता)....35
द्रव्य नाम : जटामांसी (बालछड़)....36
द्रव्य नाम : जपा (गुड़हल)....37
द्रव्य नाम : जम्बू (जामुन)....38
द्रव्य नाम : जातीफल (जायफल)....39
द्रव्य नाम : ज्योतिष्मती (मालकांगनी)....40
द्रव्य नाम : कृष्ण जीरक (काला जीरा)....41
द्रव्य नाम : श्वेतजीरा (सफेदजीरा)....42
द्रव्य नाम : तालीसपत्र (धात्रीपत्र)....43
द्रव्य नाम : तुलसी (सुरसा)....44
द्रव्य नाम : त्रिवृता (निशोथ)....45
द्रव्य नाम : त्वक् (दालचीनी)....46
द्रव्य नाम : दाडिम (अनार)....47
द्रव्य नाम : धन्वयास (दुरालभा)....48
द्रव्य नाम : धातकी (धायफूल)....49
द्रव्य नाम : धान्यक (धनिया)....50
द्रव्य नाम : नागपुष्प (नागकेशर)....51
द्रव्य नाम : निम्ब (नीम)....52
द्रव्य नाम : निर्गुण्डी (सम्भालू)....53
द्रव्य नाम : पलास (ढाक)....54
द्रव्य नाम : पाठा (पाढ)....55
द्रव्य नाम : पाषाण भेद (अश्मध्न)....56
द्रव्य नाम : पिप्पली (मागधी, कणा)....57
द्रव्य नाम : पुनर्नवा (रक्तपुनर्नवा) (लालसांठी)....58
द्रव्य नाम : बला....59
द्रव्य नाम : बाकुची (सोमराजी)....60
द्रव्य नाम : ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी)....61
द्रव्य नाम : बिल्व (बेल)....62
द्रव्य नाम : बीजक (विजयसार)....63
द्रव्य नाम : बृहती (बड़ी कटेरी)....64
द्रव्य नाम : भल्लातक (भिलावा)....65
द्रव्य नाम : भारंगी (ब्राह्मण्यष्टिका)....66
द्रव्य नाम : भूम्यामलकी (भूमि आंवला)....67
द्रव्य नाम : भृंगराज (भांगरा)....68
द्रव्य नाम : मंजिष्ठा (मंजीठ, समंगा)....69
द्रव्य नाम : मदनफल (मैनफल)....70

द्रव्य नाम : मण्डूकपर्णि (ब्राह्मी)....71
द्रव्य नाम : मरिच (कालीमिर्च)....72
द्रव्य नाम : मुस्तक (नागरमोथा)....73
द्रव्य नाम : मेथिका (मेथी)....74
द्रव्य नाम : मेषशृंगी (मेढ़ासींगी, गुड़मार)....75
द्रव्य नाम : मधुयष्टि (मुलहठी, यष्टिमधु)....76
द्रव्य नाम : रसोन (लहसुन)....77
द्रव्य नाम : रास्ना (ऐलापर्णी)....78
द्रव्य नाम : लज्जालु (लाजवन्ती)....79
द्रव्य नाम : लता करंज....80
द्रव्य नाम : लवंग (देवकुसुम)....81
द्रव्य नाम : लोध्र (पठानी लोध)....82
द्रव्य नाम : वच (धोडवचा)....83
द्रव्य नाम : वत्सनाभ (मीठा विष)....84
द्रव्य नाम : वरुण (वरुण)....85
द्रव्य नाम : वासा (अडूसा)....86
द्रव्य नाम : विडंग (वायविडंग)....87
द्रव्य नाम : विभीतक (बहेड़ा)....88
द्रव्य नाम : शंखपुष्पी (शंखाहुली)....89
द्रव्य नाम : शतावरी (शतावर)....90
द्रव्य नाम : शल्लकी....91
द्रव्य नाम : शाल्मली (सेमल)....92
द्रव्य नाम : शिग्रु (शोभाञ्जन)....93
द्रव्य नाम : शुण्ठी एवं आर्द्रक (अदरक)....94
द्रव्य नाम : सर्पगन्धा (धवलबरुआ)....95
द्रव्य नाम : सारिवाद्रम अनन्तमूल (श्वेत, कृष्ण सारिवा)....96
द्रव्य नाम : सैरेयक (पिया बांसा)....97
द्रव्य नाम : हरिद्रा (हल्दी)....98
द्रव्य नाम : हरीतकी (हर्रे) या हरड़....99
द्रव्य नाम : हिंगु (हींग)....100

द्रव्यगुण विज्ञान द्वितीय भाग (भाग ख) (अन्य औषधोपयोगी द्रव्य)

द्रव्य नाम : अंकोट (अंकोल, ढेरा)....101
द्रव्य नाम : अगरु (अगर)....102
द्रव्य नाम : अगस्त्य (अगस्त)....103
द्रव्य नाम : अतसी (अलसी)....104
द्रव्य नाम : अतिबला (कंघी)....105
द्रव्य नाम : अपराजिता (कोयल)....106

द्रव्य नाम : अम्लवेतस् (अम्लवेत).....107
द्रव्य नाम : अर्क (आक).....108
द्रव्य नाम : अरलु.....109
द्रव्य नाम : अरिष्टक (रीठा).....110
द्रव्य नाम : अष्टवर्ग.....111
द्रव्य नामः अश्वगोल (इसबगोल).....112
द्रव्य नाम : अश्वत्थ (पीपल).....113
द्रव्य नाम : आकारकरभ (अकरकरा).....114
द्रव्य नाम : आम्र (आम).....115
द्रव्य नाम : आम्रगन्धि हरिद्रा (आमा हल्दी).....116
द्रव्य नाम : आवर्तकी (चर्मरंगा).....117
द्रव्य नाम : आवर्तनी (मरोड़फली).....118
द्रव्य नाम : इंगुदी (हिंगोट).....119
द्रव्य नाम : कुटज.....120
द्रव्य नाम : इन्द्रवारूणी (इन्द्रायण).....121
द्रव्य नाम : इरिमेद (अरिमेद).....122
द्रव्य नाम : इक्षु (ईख).....123
द्रव्य नाम : इक्षुरक (कोकिलाक्ष).....124
द्रव्य नाम : ईश्वरी (नाकुली).....125
द्रव्य नाम : उदीच्य (नेत्रबाला) (ह्बीबेर).....126
द्रव्य नाम : उदुम्बर (गुलर).....127
द्रव्य नाम : उपकुच्चिका (काला जाजी).....128
द्रव्य नाम : एलुवा (मुसब्बर).....129
द्रव्य नाम : कंकोल (शीतल मिर्च).....130
द्रव्य नाम : कटफल (कायफल).....131
द्रव्य नाम : कटुतुम्बी (इक्ष्वाकु).....132
द्रव्य नाम : कतक (निर्मली).....133
द्रव्य नाम : कदम्ब (कदम).....134
द्रव्य नाम : कदली (रम्भा, केला).....135
द्रव्य नाम : कपित्थ (कैथ).....136
द्रव्य नाम : कमल (अरविन्द).....137
द्रव्य नाम : करंज (नक्तमाल).....138
द्रव्य नाम : करवीर (कनेर).....139
द्रव्य नाम : करीर (कैर, करील).....140
द्रव्य नाम : कर्पूर (कपूर).....141
द्रव्य नाम : कर्पूरकचरी (शटी).....142
द्रव्य नाम : कस्तूरी (मृगमद).....143
द्रव्य नाम : काकमाची (मकोय).....144

द्रव्य नाम : कार्पास (कपास).....145
द्रव्य नाम : कारवेल्लक (करेला).....146
द्रव्य नाम : कासमर्द (कसौंदी).....147
द्रव्य नाम : काश.....148
द्रव्य नाम : कासनी.....149
द्रव्य नाम : कीटमारी यवानी.....150
द्रव्य नाम : किराततिक्त (चिरायता).....151
द्रव्य नाम : कुपीलु कुचला.....152
द्रव्य नाम : कुमुद (निलोफर).....153
द्रव्य नाम : कुश (डाभ).....154
द्रव्य नाम : कुष्ठ (कूठ).....155
द्रव्य नाम : कुष्माण्ड (पेठा).....156
द्रव्य नाम : कैडर्य.....157
द्रव्य नाम : केबुक (केवा).....158
द्रव्य नाम : कोशातकी (धामार्गव).....159
द्रव्य नाम : कोशातकी (तोरई).....160
द्रव्य नाम : खर्जूर (खजूर).....161
द्रव्य नाम : गन्धप्रसारिणी.....162
द्रव्य नाम : गर्जर (गाजर).....163
द्रव्य नाम : गुञ्जा (रत्ती).....164
द्रव्य नामः गोजिह्वा (गाजवां).....165
द्रव्य नामः गोरख गांजा (गोरख बूंटी).....166
द्रव्य नामः गोरखमुण्डी (मुण्डी).....167
द्रव्य नामः गोरोचन (गोलोचन).....168
द्रव्य नाम : चन्द्रशूर (हालों).....169
द्रव्य नाम : चम्पक (सुलतान चम्पा).....170
द्रव्य नाम : चव्य (चाभ).....171
द्रव्य नाम : चांगेरी (तीनपतिया).....172
द्रव्य नाम : चिरबिल्व.....173
द्रव्य नाम : जयपाल (जमालगोटा).....174
द्रव्य नाम : जाती (चमेली).....175
द्रव्य नाम : जीवन्ती.....176
द्रव्य नाम : तगर (नहुष).....177
द्रव्य नाम : तरुणी (शतपत्री, गुलाब).....178
द्रव्य नाम : तवक्षीर (तेखुर).....179
द्रव्य नाम : तमालपत्र (पत्रकम् तेजपत्ता).....180
द्रव्य नाम : तालमूली (काली मूसली).....181
द्रव्य नाम : तिल (तिल्ली).....182

द्रव्य नाम : तुवरक (चालमोगरा) 183
द्रव्य नाम : त्रपुष (खीरा) 184
द्रव्य नाम : तैलपर्ण (यूकेलिप्टस) 185
द्रव्य नाम : दन्ती (उदुम्बरपर्णी) 186
द्रव्य नाम : द्राक्षा (मुनक्का) 187
द्रव्य नाम : दारुहल्दी 188
द्रव्य नाम : द्वीपान्तरवचा (चोपचीनी) 189
द्रव्य नाम : दूर्वा (दूब) 190
द्रव्य नाम : देवदारू (देवदार) 191
द्रव्य नाम : द्रोणपुष्पी (गूमा) 192
द्रव्य नाम : धतूर (धतूरा) 193
द्रव्य नाम : नल (नरकट) 194
द्रव्य नाम : न्यग्रोध (वट) 195
द्रव्य नाम : नागबला (गंगेरण) 196
द्रव्य नाम : नारीकेल (नारियल) 197
द्रव्य नाम : निम्बूक (निम्बु) 198
द्रव्य नाम : नीलिनी (नीली) 199
द्रव्य नाम : पटोल (परवल) 200
द्रव्य नाम : पत्रांग (पतंग) 201
द्रव्य नाम : पद्मक (पद्मकाष्ठ) 202
द्रव्य नाम : परुषक (फालसा) 203
द्रव्य नाम : पलाण्डु (प्याज) 204
द्रव्य नाम : पर्णबीज (पत्थर चूर) 205
द्रव्य नाम : पर्णयवानी (पत्ता अजवायन) 206
द्रव्य नाम : पर्पट (पित्तपापड़ा) 207
द्रव्य नाम : पाटला (पाढल) 208
द्रव्य नाम : पारिजात (हारसिंगार) 209
द्रव्य नाम : पाताल गरुडी 210
द्रव्य नाम : पारिष (पारसपीपल) 211
द्रव्य नाम : पीपलामूल 212
द्रव्य नाम : पीलु 213
द्रव्य नाम : पुत्रजीवक (जीयापोता) 214
द्रव्य नाम : पुष्करमूल (पोकर मूल) 215
द्रव्य नाम : पूग (सुपारी) 216
द्रव्य नाम : पूतिहा (पुदिना). 217
द्रव्य नाम : पूतिकरंज (लताकरंज) 218
द्रव्य नाम : प्रसारिणी (खींप) 219
द्रव्य नाम : प्रियंगु (प्रियंगु) 220

द्रव्य नाम : प्रियाल (चिरौंजी)....221
द्रव्य नाम : पृश्निपर्णी (पिठवन)....222
द्रव्य नाम : प्लक्ष (पिलखन)....223
द्रव्य नाम : बकुल (मौलसरी)....224
द्रव्य नाम : बदर (बेर)....225
द्रव्य नाम : बब्बूल (कीकर)....226
द्रव्य नाम : बोल (हीराबोल)....227
द्रव्य नाम : मदयन्तिका (मेंहदी)....228
द्रव्य नाम : महानिम्ब (बकायण)....229
द्रव्य नाम : मातुलुंग (बिजौरा, बीजपूर)....230
द्रव्य नाम : मायाफल (माजूफल)....231
द्रव्य नाम : मारकण्डिका (सनाय)....232
द्रव्य नाम : माष (उड़द)....233
द्रव्य नाम : माषपर्णी (मसवन)....234
द्रव्य नाम : मुद्गपर्णी (मुगवन)....235
द्रव्य नाम : मूर्वा (पीलुपर्णी)....236
द्रव्य नाम : मूलक (मूली)....237
द्रव्य नाम : यवानी (अजवायन)....238
द्रव्य नाम : राजिका (राई)....239
द्रव्य नाम : रोहितक (रोहिड़ा)....240
द्रव्य नाम : लता कस्तूरी (मुश्कदाना)....241
द्रव्य नाम : लांगली (कलिहारी)....242
द्रव्य नाम : वंश लोचन (वंश सार)....243
द्रव्य नाम : वाताद (बादाम)....244
द्रव्य नाम : वाराहीकन्द....245
द्रव्य नाम : विदारी (विदारी कन्द)....246
द्रव्य नाम : वृक्षाम्ल (कोकम)....247
द्रव्य नाम : वृद्धदारु (विधारा)....248
द्रव्य नाम : व्याघ्रनखी (हिंस्रा, करेरूवा)....249
द्रव्य नाम : शटी (कर्चूर)....250
द्रव्य नाम : शर (सरकण्डा)....251
द्रव्य नाम : शरपुंखा (सरपुंखा)....252
द्रव्य नाम : शालपर्णी (सरिवन)....253
द्रव्य नाम : श्रृंगाटक (सिंघाड़ा)....254
द्रव्य नाम : शिरीष (सिरस)....255
द्रव्य नाम : शिंशपा (शीशम)....256
द्रव्य नाम : सर्ज (शाल)....257
द्रव्य नाम : सप्तचक्रा (सप्तरंगी)....258

द्रव्य नाम : सप्तपर्ण....259
द्रव्य नाम : सरल (चीड़)....260
द्रव्य नाम : सर्षप (सरसों)....261
द्रव्य नाम : स्वर्णक्षीरी (सत्यनाशी)....262
द्रव्य नाम : स्नुही (थूहर)....263
द्रव्य नाम : हृतपत्री (डिजिटेलिस)....264
वर्ग प्रकरण....265
जल–वर्ग....265
इक्षु वर्ग....266
दुग्ध–वर्ग....267
दधि–वर्ग....269
तक्र–वर्ग....270
नवनीत–वर्ग....271
घृत–वर्ग....271
मूत्र–वर्ग....272
मधु–वर्ग....273
धान्यवर्ग....274
तैल–वर्ग....275
मांस–वर्ग....276
लवण वर्ग....278
संधान एवं मद्य वर्ग....278
आहारोपयोगी वर्ग....280
फलवर्ग....281
शाक वर्ग....281
जांगम द्रव्य....282
मुक्ता....286
द्रव्य क्रियात्मक परीक्षण....291
क्रियात्मक दृष्टि से द्रव्य परिचय....291
गुडूची....291
अस्थिश्रृंखला काण्ड....292
पत्र में वासा कुमारी....293
कुमारी पत्र....294
पुष्प में धातकी, जपा....295
जपा पुष्प....296
फल में मरिच, मदनफल, विडंग....296
मदनफल....298
विडंग....298
त्वक् में: अर्जुन, कुटज त्वच....299

कुटज, कुटज त्वक्.....300
बीज में–कपिकच्छु, एरण्ड.....300
एरण्ड बीज.....301
निर्यास में : हिंगु–गुग्गुलु, मोचरस.....302
गुग्गुलु.....303
मोचरस.....303
मूल में पुनर्नवा, चित्रक.....304
चित्रक.....304
जांगम द्रव्य मधु एवं घृत.....305

द्रव्यगुण विज्ञान द्वितीय भाग
भाग क (वर्तमान पाठ्यक्रमानुसार)

द्रव्य नाम : अग्निमन्थ (अरणी) Premna Mucronata Roxb

वानस्पतिक नामः *Clerodendrum phlomidis.* (Linn)।
वानस्पतिक कुलः निर्गुण्डी कुल (Verbenaceae)।
गणः शोथहर, शीतप्रशमन, अनुवासनोपग (च) वृ० पञ्चमूल, वातप्रशमन, वीरतर्वादि, वरुणादि (सु०)।
सं० पर्यायः जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी।
भाषानामः हि० अरणी, गणियार, म० ऐरण, गु० अरणी, बं० गणियारी, ता० थलनजी ते० नेल्ली चेट्टु, **अंः** Dusky Fire Brand Bark।
पर्यायः निरूक्ति।
अग्निमन्थः अग्निमध्नाति मन्थ विलोऽने।
गणकारिकाः गणं समूंहमित्यर्ति इति।
श्रीपर्णीः श्रीपर्णेषु अस्य इति।
जया जयन्तीः जयन्ते शोथ पाण्ड्वादिरोगन् इति।
तर्कारिः तर्क ऋच्छति इति।
उपयोगी अंगः पत्र, मूल, त्वक्।
रसः तिक्त, कषाय।
गुणः लघु, रूक्ष।
वीर्यः उष्ण।
विपाकः कटु।
प्रभावः शोथहर, अनुलोमन।
दोष कर्मः कफ वात शामक, **वीर्य कालः** 1/2 वर्षए **मात्राः** चूर्ण 5–10 ग्राम, क्वाथ 20–40 ग्राम।

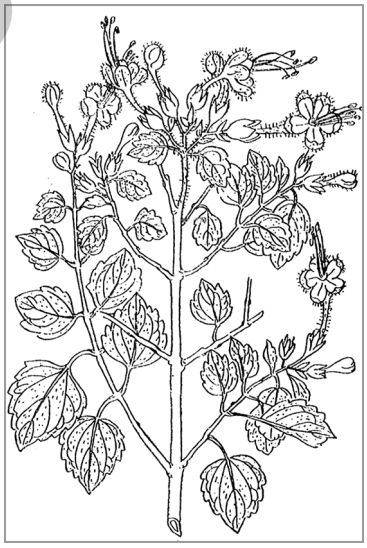
लघु अग्निमन्थ (अरणी)

आमयिक प्रयोगः अर्श, आमवात, सन्धिवात, शोथ, ग्रन्थि में लेप, कास, श्वास एवं वेदनाप्रधान विकारों में क्वाथ उपयोगी है।
रासायनिक संगठनः इसके टुकडों को परस्पर रगड़ने से अग्नि उत्पन्न होती है अतः इसे कोई तैल, राल, एसिड तथा एक प्रकार का क्षाराभ अवश्य होना चाहिए। ऋषि आश्रमों में एवं हवन में इन्हीं से अग्नि उत्पन्न की जाती थी।
उत्पत्ति एवं स्वरूपः छोटे वृक्ष सर्वत्र, विशेषतः गंगा के मैदान, राजस्थान के वन्य प्रदेशों में, **पत्र** मृदु नील हरित, पुष्प श्वेत, छोटे करोंदे के समान, **पुष्पकाल** अगस्त, **फल** शीत में।
मुख्य योगः दशमूल क्वाथ, दशमूलारिष्ट, च्यवनप्राश।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अजमोदा (अजमोद) Trachyspermum Roxburghianum (Linn)



अजमोदा (अजमोद)

वानस्पतिक नामः *Trachyspermum roxburghianum.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः शतपुष्पा कुल Apiaceae.।

गणः शूलप्रशमन, दीपनीय (च०) पिप्पल्यादिगण (सुश्रुत)।

सं० पर्यायः वस्तमोदा, हस्तिमयूरक, उग्रगन्धा, कारवी, क्षुद्रयवानी, खराश्वा, दीप्यक, कृमिनाशिनी, लोचमस्तका।

भाषा नामः हि० अजमोद, म० अजमोदा, गु० अजमोद, ता० अशम्तवोवम ते० अजमोद वामु, न० अजमोदवोमरु, ऊ०फा० करप्से हिन्दी।

अं० नामः Sallary Seed।

पर्यायः निरूक्ति।

खराश्वः खरमश्नुते इति। इसे खर खाते हैं।

कारवीः करपक्ष्म मयूरस्य इयम इति। यह मोर से सादृश्य करती है।

दीप्यापः दीपनं इति। दीप्यों अग्नि दीपनः। यह जठराग्नि दीप्त करती है।

उपयोगी अंगः बीज।

रसः कटु, तिक्त।

गुणः लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः कटु।

प्रभावः वातानुलोमन।

दोष कर्मः वात कफ शामक।

वीर्य कालः 2 वर्ष।

मात्राः चूर्ण 1–3 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः शोथ, वेदनायुक्त विकारों में बीज का लेप अग्निमांद्य, अरोचक, उदर रोग, कृमि, गर्भाशय वेदनाहरणकारी है।

रासायनिक संगठनः इसके बीजों में सुगन्धित तैल जो हल्के पीले रंग का होता है। इसमें एल्ब्युमिन, गोंद, क्षार एवं अपोइन तथा एक ग्लूकोसाइड पाया जाता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः वर्षायु क्षुप, सर्वत्र विशेषतः उ. प्र. एवं पंजाब में खेती, पत्र पक्षाकार, पुष्प छत्राकर, बीज यावानी के समान, गुच्छों में **पुष्पकाल**–शीत, **फल** वसन्त में।

मुख्य योगः अजमोदादि चूर्ण।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अतिविषा (अतीस) Aconitum Heterophylum (Wall)

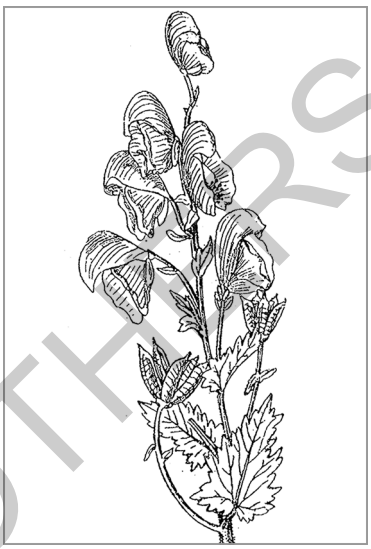

अतिविषा (अतीस)

वानस्पतिक नामः *Aconitum heterophylum.* (Wall)।

वानस्पतिक कुलः वत्सनाभ कुल Ranunculaceae.।

गणः अर्शोघ्न, लेखनीय (च०) पिप्पल्यादि, वचादि, मुस्तादि (सु०)।

संस्कृत पर्यायः शुक्लकन्दा, भंगुरा, घुणवल्लभा, काश्मीरा, घुणप्रिया।

भाषा नामः हि० अतीस, बं० आतईच, गु०म० अतिविष, ता० अतिविद्यम, कन्न० अतिविषा, ते० अतिवस, **अं० नामः** Indian Atees।

फारसीः वज्जीतुखन।

पर्यायः निरूक्ति।

अतिविषाः विषमति क्रान्ता। विष प्रभाव हरण करती है।

घुण वल्लभाः घुणप्रिया। इसकों घुण शीघ्र लगते हैं।

विश्वाः विशति अन्तविंश्वा–विशप्रवेशने। धातु से स्रोतों में शीघ्र प्रवेश करती है।

अरुणाः अरूणो वर्णोऽस्यः।

श्रृंगीः श्रृग युक्तत्वात् श्रृंगी।

प्रतिविषाः प्रतीपा विषस्य प्रतिविषा अगदत्वात्।

उपयोगी अंगः मूल, कंद।

रसः तिक्त, कटु, **गुणः** लघु, रूक्ष, **वीर्यः** शीत, **विपाकः** मधुर, **प्रभावः** विषघ्न।

दोष कर्मः त्रिदोष शामक, **वीर्य कालः** 2 वर्ष, **मात्राः** चूर्ण 1/2 से 2 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः ज्वर, अग्निमांद्य, ज्वरातिसार, प्रवाहिका, रक्तविकार, शोथ प्रतिश्याय कास में उपयोगी है। व्रण शोथ पर लेप, श्वास कास में बीजों का लुआब प्रयोग करते है। बीज कामोत्तेजक भी है।

रासायनिक संगठनः इसमें अतिविसीन नामक अतिरिक्त क्षाराभ तथा हेतिसिन एवं अत्यधिक स्टार्च होता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः ऊंचा क्षुप हिमाचल में 6–12 हजार फीट उंचाई पर, सिंध से कुमांऊ तक, कांड सरल पत्र अण्डकार पुष्प नील हरित, फल पंचकोषीय मूल द्विवर्षीय।

मुख्य योगः बालचतुर्भद्रा अतिविषादि चूर्ण।

अतिविषा बालरोगहर कर्मः इसका उपयोग बालकों के ज्वर, कास, छर्दि तथा अतिसार में विशेष रूप से किया जाता है। वृन्दमाधव में कर्कट श्रृंगी, नागरमोथा एवं अतीस मिलाकर मधु के साथ प्रयोग करने से बालकों के अनेक रोग दूर करने का उल्लेख है।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अपामार्ग (चिरचिटा)

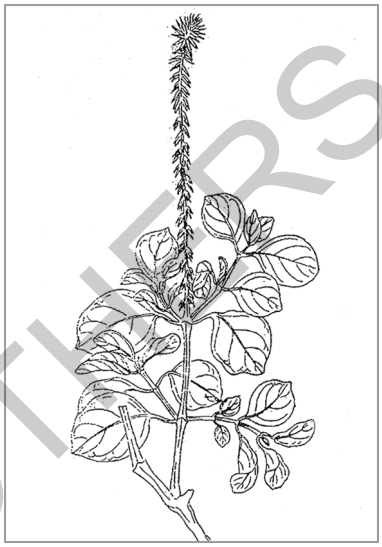

अपामार्ग (चिरचिटा)

वानस्पतिक नामः *Achyranthes aspera.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः अपामार्ग कुल Amaranthaceae.।

अंग्रेजीः Prikly chaff flower।

गणः शिरोविरेचन, वमनोपग (च०) अर्कादि (सु०)।

सं० पर्यायः शिखरी, अधःशल्य, खरमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी।

भाषाः हिन्दी–चिड़चिड़ा, लटजीरा बं० अपांग, पं० पुठकण्डा, म० अधाड़ा, गु० अधेड़ो, कन्न० उतरणी ते० अपामार्गमु०, मारवाडी औंगा, ता० नायु रवि, मल० वलियकटलाट फा० खाखाझ।

पर्यायः निरूक्ति।

अपामार्गः अपमृज्यते विनाश्यते छर्दि प्रर्भृतयो व्याधया अनेनेति।

उपयोगी अंगः मूल, पंचाग, **अंः** Prickly-Chaff Flower।

रसः कटु, तिक्त।

गुणः तीक्ष्ण, लघु, रूक्ष, **शिखरीः** शिखरे भवः शैखरिक। (ऊंची भूमि पर होता है)।

वीर्यः उष्ण, **मयूरकः** मयूर प्रतिकृति इति मयूरकः।

विपाकः कटु, **खरमञ्जरीः** खरा, मंजरी, अस्याः इति।

प्रभावः शिरोविरेचनोपग, **प्रत्यक पुष्पीः** प्रत्यक विमुखं पुष्पं आभाः इति।

दोष कर्मः वात कफ शामक।

वीर्य कालः 1 वर्ष।

मात्राः क्वाथ 30–60 ग्राम। चूर्ण 1 ग्राम, क्षार 200 मि.ग्रा.।

आमयिक प्रयोगः वेदनायुक्त शोथ में लेप, दृष्टिमांद्य में लेप, दृष्टिमांद्य में मूल का अंजन प्रयुक्त्, प्लीहावृद्धि, जलोदर, अर्शकुष्ठ में क्वाथ व स्वरस। भस्मक रोग में इसके बीजों की खीर खिलाते हैं। यह मेध्य भी है।

रासायनिक संगठनः इसकी शाखा एवं मूल में क्षार विशष रूप से पाया जाता है इनके आवरण में नमक, लौह, सोराक्षार, गंधक एवं चूर्ण भी पाया जाता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः वर्षायु क्षुप सर्वत्र शुष्क एवं ऊपर भूमि में, पत्र अभिलट्वाकार, पुष्प दीर्घ, अधोमुख मंजरी, फल धूसर, **पुष्पकाल** शरद, **फल** शीत में।

मुख्य योगः अपामार्ग क्षार, बीज चूर्ण (क्षुधाहर)।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अर्जुन (ककुभ)

वानस्पतिक नामः *Terminalia arjuna.* (Roxb) W/A।

वानस्पतिक कुलः हरीतकी कुल Combretaceae।

गणः कषाय स्कन्ध, उदर्द प्रशमन (च०) न्यग्रोधादि, शालसारादि (सु०)।

संस्कृत पर्यायः धवल, ककुभ, इन्द्रद्रु, वीरवृक्ष।

भाषाः हि० अर्जुन, काहू, म० सदरू सादड़ा, गु० खादड़ो, ता० वेल्ममद्दि, कन्न० मझां।

पर्यायः निरुक्ति।

धवलः अर्जुनः शोक्त्यात्। इसका काण्ड सफेद होता है।

वीरतरुः वीरश्चासौ तरवाइति काष्ठत्वात्।

अर्जुनः अर्जुन नाम सामान्यत्वात्, **इन्द्रेद्रुः** इन्द्रस्य इन्द्र इव वा द्रुः।

उपयोगी अंगः त्वक्, **उः** सहजो, **अं० नामः** Arjun tree

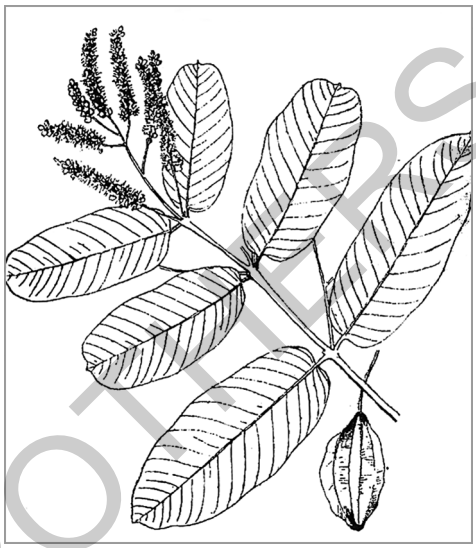

अर्जुन (ककुभ)

रसः कषाय।

गुणः लघु, रूक्ष।

वीर्यः शीत।

विपाकः कटु।

प्रभावः हृद्य।

दोष कर्मः कफ पित्त शामक।

वीर्य कालः 2 वर्ष।

मात्राः छाल चूर्ण 1–3 ग्राम। आसव 20 से 40 मि.लि.।

आमयिक प्रयोगः अस्थिभग्न में लेप, हृद्रोग, रक्तचाप अतिसार, हृत्शूल, क्षयज कास, प्रमेह, रक्तप्रदर, एवं जीर्ण ज्वर में चूर्ण, क्वाथ उपयोगी।

रासायनिक संगठनः इसकी छाल में इलेगिक एसिड, अर्जुनेटिन, बी सिरोस्टिराल तथा कैल्शियम, मैगनीशियम एवं एल्ब्युमिन पाया जाता है। इसकी छाल एवं हृदय पेशी रचना में समानता होने से यह हृदय पेशी को बल प्रदान करता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः इसके ऊंचे वृक्ष सम्पूर्ण देश में, प्रायः बंगाल, बिहार में। पत्र अमरूद सदृश, पुष्प श्वेत पीत फल कमरख सदृश पुष्प काल ग्रीष्म फल शीत।

मुख्य योगः अर्जुनारिष्ट, घृत, ककुभादि चूर्ण।

हृद्य प्रभावः हृदय पेशी (स्वरूप) विकृति में छाल विशेष उपयोगी है।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अशोक (हेमपुष्प)

वानस्पतिक नामः *Saraca asoca Linn.* (Roxb) De wilde।

वानस्पतिक कुलः शिम्बी कुल (Leguminosae) Caesal Piniaceae.।

गणः कषायस्कन्ध, वेदनास्थापन (च०) लोध्रादि (सु०)।

सं० पर्यायः हेमपुष्प, वंजुल, ताम्रपल्लव, कंकेली, गन्धपुष्प।

भाषाः हि० अशोक, बं० असोक, म० गु० अशोक, ता० अचोकम्, कन्न० अशोक, **अं० नामः** Sorrowless tree।

उपयोगी अंगः त्वक्, बीज, पुष्प।

पर्यायः निरूक्ति।

अशोकः शोक नाशनः इति अशोकः।

कंकेलि–कंको यमः सइवइलति क्षिपति कृमि शोष विषादीन इति। कंक नामक यम की तरह कृमि आदि को नष्ट करता है।

वंजुलः वजति गच्छति शीतलत्वादि गुण विशेषात्।

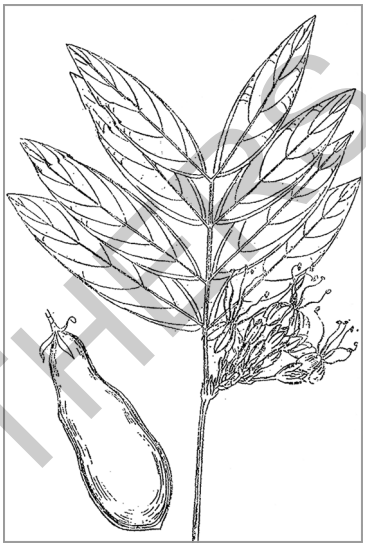

अशोक (हेमपुष्प)

रसः कषाय तिक्त।

गुणः लघु, रूक्ष।

वीर्यः शीत।

विपाकः कटु।

प्रभावः गर्भाशय शोधक।

दोष कर्मः पित्त, कफ शामक।

वीर्य कालः 2 वर्ष।

मात्राः क्वाथ 10–20 ग्राम। अशोकारिष्ट 20–40 मि. लि.।

आमयिक प्रयोगः प्रदर (श्वेत, रक्त) गर्भाशयशोथ, रक्तविकार में, त्वक्–प्रयोग, रक्तपित, दाह, तृषा में चूर्ण अरिष्ट आदि का प्रयोग लाभकर होता है यह मुख्य रूप से शोथहर, स्तम्भक एवं वेदना स्थापक हैं, अतिसार, प्रवाहिका एवं कृमिहर है। गर्भाशय शिथिलता दूर करता है। मूत्राकृच्छ्र अश्मरी में भी उपयोगी है दाह शामक है। विशेषकर इसकी त्वचा लाभकर है।

रासायनिक संगठनः अशोक में हिमोटोक्सिलिन, टैनिन, कैटेचोल, सुगन्धित तैल, ग्लाइकोसाइड, कार्बनिक, कैल्शियम एवं लौह के योगिक पाये जाते हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः मध्य एवं पूर्व हिमालय तथा दक्षिण भारत में पत्र आम सदृश, रक्त वर्ण शिम्बी, पुष्पकाल वसन्त, फल शरद।

मुख्य योगः अशोकारिष्ट, हेमपुष्पा वटी।

स्त्रियों के लिए उपयोगः इसमें स्तम्भन एवं वेदना स्थापक गुण होने से यह गर्भाशय की संकोच क्रिया को बढ़ाता है। कष्टार्तव, वेदना आदि विकारों को दूर करता है इसका उत्तेजक प्रभाव गर्भाशयिक अन्तःकला तथा बीज कोष पर उत्तेजक प्रभाव होता है। अतः कष्टार्तव एवं गर्भाशय शैथिल्य पर विशेष प्रभावी है।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अश्वगन्धा (असगन्ध)

वानस्पतिक नामः *Withania somnifera.* (Linn) Dunal।

वानस्पतिक कुलः कण्टकारी कुल Solanaceae।

गणः बल्य, बृंहणीय, मधुरस्कन्ध (च०)।

सं० पर्यायः वाजिगन्धा, तुरगी (अश्व के नाम वाला) वाराहकर्णी।

भाषाः हिन्दी असगन्ध, बं० अश्वगन्धा, गु०म० आसान्द्र घोड़ा आकुल, ता० आमगुलांग, ते० पनेरू, कन्न० अश्वगन्धी फा० बेहमन बसर। **अं० नामः** Indian Winter cherry।

पर्यायः निरूक्ति।

अश्वगन्धाः अश्वस्य गन्ध इव गन्धोयस्याः सा।

वाराहकर्णीः वराहस्य कर्णः इव पत्रं यस्या सा।

उपयोगी अंगः मूल।

रसः तिक्त, कषाय, मधुर।

गुणः स्निग्ध, लघु।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः मधुर।

प्रभावः बल्य।

दोष कर्मः वात कफहर।

वीर्य कालः 1 वर्ष।

मात्राः 3–5 ग्राम।

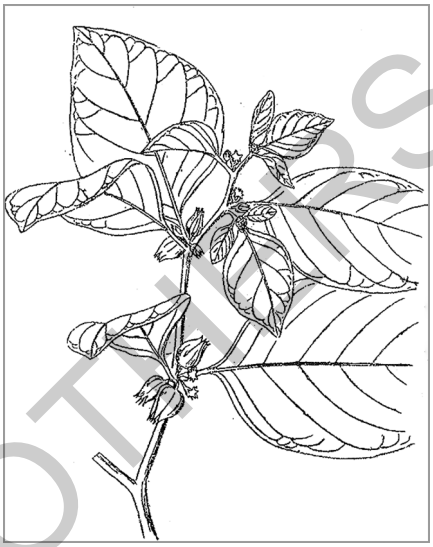

अश्वगन्धा (असगन्ध)

आमयिक प्रयोगः ग्रन्थिशोथ, प्लेग, गलरोग, हृददौर्बल्य, शोथ, रक्तविकार, क्षय तथा रस मांस क्षय में उपयोगी रसायन है। व्यवहार में मोटापा कम करने के लिए इसके पत्तों का प्रयोग करते हैं। इसकी मूल बृहण, बल्य एवं वाजीकर है। इसके तैल का प्रयोग करने से शिश्न वृद्धि होती है। यह प्रजनन संस्थान पर विशेष प्रभावी है।

रासायनिक संगठनः इसकी मूल में उड़नशील तैल, विथोनियाल नामक पदार्थ, फाइट्रोस्ट्रेराल एवं तैल आदि होते है। कुछ क्षाराभ जिनमें से सेम्निफेरिन विशेष है। इनके अतिरिक्त विधानियाल अम्ल, शर्करा, स्टार्च एवं एमिनो एसिड़ भी मिलते हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः क्षुप देश के उष्ण या समशीतोष्ण प्रान्तों में, पत्र अखंड लट्वाकार, पुष्प पत्रकोणोद्भूत, फल मटरसदृश, बीज अनेक पुष्प काल शरद फल वसन्त।

मुख्य योगः अश्वगंधादि चूर्ण, घृत, तैल।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अस्थि संधारक (अस्थि संहारी)

वानस्पतिक नामः *Cissus quadrangularis.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः द्राक्षा कुल Vitaceae।

अंग्रेजीः Edible Stemmed vine।

सं० पर्यायः अस्थि श्रृंखला, व्रजवल्ली, वज्रांगी।

भाषा नामः हि० हडजोड़, कन्न० हडजोडी, म० काण्डबेल, गु० हाडलाक, ता० पिण्डयि, ते० न्नाल्लेरू, कमगरोली। **अं० नामः** Devil's backbone।



अस्थि संधारक (अस्थि संहारी)

उपयोगी अंगः काष्ठ, पत्र।

अस्थिसंहारीः अस्थिभग्न रोगं संहारयति योजयतीति।

रसः मधुर, **पर्यायः** निरूक्ति।

गुणः रूक्ष, लघु।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः अम्ल।

प्रभावः अस्थि सन्धानीय।

दोष कर्मः वात कफ शामक, अस्थि श्रृंखला।

वीर्य कालः ताजे काण्ड, शुष्क छः मास।

मात्राः स्वरस 10–20 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः कर्णस्राव, नासागत रक्तस्राव, अपस्मार, वातव्याधि, प्लीहा अस्थिभग्न एवं वाजीकरणार्थ उपयोगी।

रासायनिक संगठनः इससे प्रोटीन, विटामिन सी तथा कैल्शियम आक्जीलेट एवं कैरोटीन होते हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः बहुवर्षायु वृक्षावरोही, लताएं दक्षिण भारत के उष्ण प्रान्तों में पर्वयुक्त चतुष्कोण। काण्ड मांसल, पत्र ग्रन्थ्योद्भूत, हृदयाकृति, वृन्त छोटा, पुष्प छोटे हरित, एकान्तर फल मटर के समान।

मुख्य योगः अस्थिसंहारी तैल एवं लेप।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : अहिफेन (अफीम)

वानस्पतिक नामः *Papaver somniferum.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः अहिफेन कुल Papaveraceae।

गणः उपविष गण।

सं० पर्यायः आफूक, खसफल, फणिफेन।

भाषाः हि० अफीम, (अमल), कन्न० अफीम, बं० आफिम, म० अफ्फू, गु० अफीण, अर० अफ्यून, ते० अमिनि, क० अफिनि, ता० अविनि। **अं० नामः** Opium।

उपयोगी अंगः निर्यास, बीज, फल, त्वक्।



अहिफेन (अफीम)

पर्यायः निरूक्ति।

अहिफेनेः आहेः फेन गरलमिव।

रसः तिक्त।

गुणः सूक्ष्म, रूक्ष।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः कटु।

प्रभावः मादक, स्तम्भक।

दोष कर्मः वात, कफ शामक।

वीर्य कालः दीर्घ अवधि।

मात्राः 1–2 ग्राम चूर्ण।

आमयिक प्रयोगः शोथयुक्त वेदना विकारों में लेप, शूलप्रधान विकार व पार्श्व शूल, विषमज्वर प्रमेह, मधुमेह, गर्भपात व शीघ्रपतन में उपयोगी, वेदना स्थापक एवं अतिसार में स्तम्भक रूप से प्रभावी है।

रासायनिक संगठनः इसमें मॉर्फिन, नार्कोटिन, कोडीन, पेपवरीन नामक क्षाराभ पाये जाते हैं इनके अतिरिक्त राल, उड़नशील तैल, गन्धद्रव्य, कैल्शियम एवं मैग्नीशियम के लवण पाये जाते हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः अर्धवर्षायु क्षुप मध्यभारत–मालवा, राजस्थान, बिहार आदि में। पत्र दीर्घ, पुष्प श्वेत, फल सम्पुट, दाडिम के समान बीज छोटे फल–मार्च पुष्प काल दिसम्बर।

मुख्य योगः कर्पूररस, दुग्ध्वटी अहिफेनासव, समीरगज केशरी, वेदनान्तक रस।

वेदना शामक एवं अनिद्राहर कर्मः इसमें होने वाले रासायनिक विशेषकर मार्फिन के कारण यह वेदना शामक एवं निद्राजनन भी हैं। निद्रा लाने वाले एवं वेदना शामक योगों में अहिफेन का प्रयोग किया जाता है।

शोधनः इसे जल में धोकर, छानकर मन्द अग्नि पर पकाकर गाढ़ा करते है। अदरक स्वरस की 21 भावना देकर औषध प्रयोग में लाते है।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : आमलकी (आंवला, धात्री)

वानस्पतिक नामः *Emblica officinalis.* gaertn।
वानस्पतिक कुलः एरण्ड कुल Phyllanthaceae।
अंग्रेजीः Emblic myrobalan।
गणः वयःस्थापन, विरेचनोपग (च०) त्रिफला, परुषकादि (सु०)।
सं० पर्यायः धात्री, वयस्था, अमृतफल, वृष्य, श्रीफल, अमृतफल।
भाषा हिन्दीः हि० आंमला, म० गु० आमरा, त० नेल्लिकाई, ते० उरुरीकाई, कन्न० मल० नेल्लि, फा० आमलज, उ० अण्डा, **अं० नामः** Indian gooseberry
उपयोगी अंगः फल, पत्र।
रसः लवण रहित 5 रस।
पर्यायः निरूक्ति। **आमलकीः** मलधारणे आसमन्तात मलते धारयति रसायन गुणान् इति। **अमृतफलः** न म्रियते अनया इति। इसके फल सेवन से अकाल मृत्यु नहीं होती, **धात्रीः** ध्रियते पीयते इयंरसायनादि गुणांथिभिः इति, **वयस्थाः** वयो यौवनं तिष्ठति अनया इति। चिरकाल सेवन से यौवन स्थिर रहता है।



आमलकी (आंवला, धात्री)

गुणः लघु, रूक्ष, **वीर्यः** शीत, **विपाकः** मधुर, **प्रभावः** रसायन।
दोष कर्मः त्रिदोष शामक।
मात्राः 2–4 ग्राम चूर्ण।
आमयिक प्रयोगः अम्लपित्त, दाह, पालित्य, नेत्ररोग, छर्दि, गुल्म, उदावर्त, रक्तपित्त, तृषा, कास श्वास, प्रतिश्याय एवं यहां रसायन है। यह रोचक, दीपक एवं अनुलोमन भी है, वृष्य, हृद्य एवं प्रमेह नाशक है।
रासायनिक संगठनः इसमें विटामिन सी तथा पेक्टीन अधिक मात्रा में होते हैं साथ ही गैलिक एवं टैनिन एसिड पाये जाते है। इसमें खनिज एल्ब्यूमिन, सेल्युलोज भी मिलते हैं। यहां तक देखा गया है कि सूखे चूर्ण में एवं गरम करने पर भी पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी रहता है। आयुर्वेद में यह विशिष्ट रसायन है।
उत्पत्ति एवं स्वरूपः छोटे वृक्ष देश के सभी प्रान्तों में उद्यानों में रोपण एवं स्वयं उत्पन्न। पत्र हरित पीताभ, संयुक्त, पुष्प एकलिंगी फल वर्तुल पुष्प काल शरद, फल शिशिर में।
मुख्य योगः आमलकी रसायन, च्यवनप्राश, त्रिफला चूर्ण, त्रिफला घृत।
भाव प्रकाश के अनुसार त्रिदोषघ्नताः भाव प्रकाश में इसके गुणों का वर्णन करते हुए त्रिदोष नाशक बताया है। यह अम्लता के कारण वात का, मधुरता से पित्त का तथा रूक्षता एवं कषाय गुण के कारण कफ शामक है। **हन्तिवात रसाम्लत्वात् पित्त माधुर्य शैत्यतः। कफं रूक्षं कषायत्वात् फलं धांत्र्या त्रिदोषजित।।**
आंवले का रसायन कर्मः आयुर्वेद महर्षियों के अनुसार उत्तम रसायन है। संगठन की दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि इनके फल में शर्करा, निर्यास, टैनिक एसिड, एल्ब्युमिन, खनिज द्रव्य एवं सेल्युलोज पाये जाते हैं। इसमें प्रोटीन, वसा, लौह एवं फास्फोरस सभी होते हैं। अतः धातु पोषक, इन्द्रिय बलवर्धक, हृद्य, रसायन एवं शुक्रवर्धक, गर्भाशय तथा इन्द्रिय दौर्बल्य दूर करता हैं। खालित्य पालित्य को दूर कर शरीर को पुष्ट करता है।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : आरग्वध (अमलतास)

वानस्पतिक नामः *Cassia fistula.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः शिम्बी कुल (Leguminaceae) (Caesalpiniaceae)।

गणः कुष्ठघ्न, कण्डूघ्न, विरेचन, तिक्तस्कन्ध (च०) आरग्वधादि, श्यामादि, अधेभागहर (सु०)।

अंग्रेजीः Pudding pie tree/Purging cassia।

सं० पर्यायः व्याधिघात, कर्णिकार, राजवृक्ष, सम्पाक्, चतुरंगुल, कृतमाल।

भाषाः हि० अम्लतास, म० बाहवा, गु० गरमालो, बं० सोंदाल, ता० कोण्ड्रे, ते० आरग्वधमु, कन्न० फसूस, प० गिर्धनली म० कणिकोन्ना, अ० खियार फा० शम्बर। **अं० नामः** Indian Laburnum

उपयोगी अंगः पत्र, पुष्प, फल, मज्जा।



आरग्वध (अमलतास)

पर्यायः निरूक्ति।

राजवृक्षः वृक्षाणां राजा इति।

सम्पाकः सम्पाक् पाकां अस्य इति। इससे दोष पाक शीघ्र होता है।

कृतमालः कृतामालाऽस्य पुष्पैः इति।

आरग्वधः आसमन्तात् रग्यते शक्यते इति आरक। आरगं रोगंशंकांमपिहन्ति इति।

रसः तिक्त, मधुर।

गुणः स्निग्ध मृदु, गुरू।

वीर्यः शीत।

विपाकः मधुर।

प्रभावः मृरेचन।

दोष कर्मः वात पित्त शामक।

वीर्य कालः 1 वर्ष।

मात्राः 3–8 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः मुखपाक, तुंडीकेरी में मज्जा क्वाथ, कामला, यकृच्छोथ, गुल्म शोथ, कुष्ठ में एवं कोष्ठबद्धता में उपयोगी।

रासायनिक संगठनः इसमें रंजक पदार्थ, शर्करा, गोंद, पेक्टीन, सुगन्धित, उड़नशील तैल तथा हाईड्रोक्सीमेथिल पाये जाते हैं। संशोधन कर्म में उपयोगी द्रव्य है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः मध्यमाकार वृक्ष सर्वत्र उत्पन्न होते हैं। काण्ड सरल, पत्र संयुक्त, पुष्प दीर्घ पीतदण्ड पर, शिम्बी, बेलनाकार, कृष्ण रक्ताभ पुष्प काल वसन्त, फल शरद।

मुख्य योगः आरग्वधारिष्ट आरग्वधावलेह।

शारंगधरोक्त कर्मः शारंगधर ने स्रंसन कर्म में इसका नाम लिखा हैं साथ ही वात कफ में आम से उत्पन्न ज्वर में आरग्वधादि क्वाथ का उल्लेख किया है इसके भेदी, दीपन, पाचन आदि कर्म भी लिखे हैं।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : उशीर (खस)



उशीर (खस)

वानस्पतिक नामः *Vetiveria zizanioidis.* (Linn) Nash।

अंग्रेजीः Cuscus gsess. (khas khas grass)।

वानस्पतिक कुलः यव कुल Graminae।

गणः स्तन्य जनन, छर्दि, निग्रहण, दाह पशमन, तिक्त स्कन्ध (च) सारिवादि, पित्त शमन (सु०)।

संस्कृत पर्यायः वीरण, सेव्य, वीरभद्र, अमृणाल, अभय, नलद।

भाषा नामः हि० खस, बाला, गु० वीर भगोना बाला मं० बाला, कन्न० मुडिवाल, ते० वेट्टिवेलु, फा० रेशमये बाला।

अं० नामः Khas Khas grass।

पर्यायः निरूक्ति।

उशीरः उष्यते इस्यते सर्वैः माधुर्यादि गुणकत्वात्।

नलदः नलं गन्धं ददाति इति।

मृणालः मृणालं इव इति। कमल दण्ड के समान।

सेव्यम्: सेवितुं योग्य ज्वरादिनाशकत्वात् इति।

उपयोगी अंगः मूल, **रसः** मधुर, तिक्त।

गुणः लघु, रूक्ष, **वीर्यः** शीत।

विपाकः कटु, **प्रभावः** दाहशामक।

दोष कर्मः पित्त शामक, **वीर्य कालः** 2 वर्ष, **मात्राः** चूर्ण 3–5 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः प्रदाह, अतिस्वेद, त्वग् रोग, तृष्णा, छर्दि, अतिसार, रक्तपित्त मूर्च्छा, कास, श्वास व हिक्का में प्रयुक्त।

रासायनिक संगठनः इसमे राल, रंजक पदार्थ एवं एक उड़नशील तैल भी पाया जाता है साथ ही अम्ल द्रव्य एवं लोह की मात्रा भी होती है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः बहुवर्षीय क्षुप, दलदली भूमि प्रदेश, बंगाल, बिहार राजस्थान में। पत्रपुंज अर्क समान पुष्प हरित, पीत, रक्त गुच्छों में मूल तन्तुमय, सुगन्धयुक्त, पुष्पकाल वर्षा, फल शरद।

मुख्य योगः उशीरासव, शर्बतखस।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : एरण्ड (एरण्डी)

वानस्पतिक नामः *Ricinus communis.* (Linn)।

वानस्पतिक कुलः एरण्ड कुल Euphorbiaceae।

गणः भेदनीय, स्वेदोपग, अंगमर्दप्रशमन, मधुरस्कन्ध (च०) विदारीगन्धादि, अधोभागहर, वात संशमन (सु०)।

संस्कृत पर्यायः गन्धर्वहस्त, पञ्चगुल, चित्रबीज, वातारि, उरुबुक, हस्तिकर्ण।

भाषा नामः हि० एरण्ड, एरण्डी, गु० एरण्डो, म० एरण्डी, बं० भेरेंण्डा, फा० वेद अंजीर, ता० अमणक्कम्, कोट्टईमुभु, ते० आमुडामुचेट्टु। गु० एरैडो, मल० अवनकु, फा० बेद अंजीरे, अं० Castor oil plant.

पर्यायः निरूक्ति।

एरण्डः एरयति वायुमिति एरण्ड। वायु को दूर करता है।

उरुबूकः उरुं महान्तं वायुं वार्यति इति। यह प्रबुद्ध वायु हर है।

गन्धर्वहस्तकः गन्धर्वस्य मृग विशेषस्य भूतविशेषस्यैव वा हस्तो अस्य इति।

पञ्चांगुलः पञ्चपत्रात्वात् पञ्चागुलः इति।

वातारिः वातस्यः अरिः शत्रुनाशनो वा इति।



एरण्ड (एरण्डी)

उपयोगी अंगः बीज, पत्र, मूल।

रसः मधुर, कटु, कषाय।

गुणः तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः मधुर, **प्रभावः** भेदनीय।

दोष कर्मः त्रिदोषहर, **वीर्य कालः** बीज 2 वर्ष।

मात्राः क्वाथ 40–50 मि.ली.।

आमयिक प्रयोगः शोथ, स्तनशोथ, ग्रन्थि, वातव्याधि, त्वग् रोग, गुल्म, विबन्ध, कृमि, अर्श, शूल, कटिबस्ति शूल में उपयोगी। (खण्डित पत्र होने से पञ्चागुल कहते है)।

रासायनिक संगठनः इसमें रिसिनाईन नामक रवेदार पदार्थ तथा रिसिल नामक विषैला पदार्थ भी होता है तैल में ग्लीसराइड्स रहते हैं स्थिर तैल एवं मांससार भी होता है। विषाक्त तत्व वामक होता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः गुल्माकृति वृक्ष सर्वत्र वन्य व कृषि भूमि में, प्रायः बंगाल, महाराष्ट्र आदि में। पत्र खंडित चौड़े पुष्प एकलिंगी, बैंगनी, फल गोल, बीज गोललम्ब, पुष्प काल–शीत फल–ग्रीष्म में।

मुख्य योगः रास्नादि क्वाथ विषगर्भ तैल, एरण्ड पाक।

वातहर कर्मः जिस प्रकार कफ के लिए मधु, पित्त के लिए घी विशेष उपयोगी है उसी प्रकार वात विकारों में तैल को श्रेष्ठ बताया हैं अतः यह शोथहर एवं वेदना स्थापक है तथा स्वेद जनन होने से आम पाचक है। अतः आमवात सन्धि शोथ, वातरक्त, गृध्रसी में अभ्यंग एवं पत्र बांधने से लाभ होता है। मधुर, स्निग्ध होने से वात शामक हैं उष्ण होने से स्वेद जनन क्रिया से स्रोतो शोधक एवं वात की रूक्षता को दूर करता है। इसका विरेचनार्थ पंचकर्म में प्रयोग करते हैं।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : बड़ी इलायची (बृहदेला)

वानस्पतिक नामः *Amomum subulatum Roxb.*।

वानस्पतिक कुलः आर्द्रक कुल Zingiberaceae।

गणः एलादि (सु०)।

पर्यायः भद्रैला, त्रिपुटा, स्थूलैला, एला।

भाषा नामः हि० बड़ी इलायची, बं० बड एलच, गु० एलचा, ता० एलम्, ते० येंगुएलाकण, अं० काकुले, कुबार, फा० हीलकलां।

अं० नामः Black cardamom।

पर्यायः निरूक्ति।

त्रिपुटाः त्रयः पुटाः अस्या इति।

पृथिषवकाः प्रथते इति। प्रथ् प्रख्याने। गुण विस्तार से प्रख्यात है।

एलाः एलायति इति, इला प्रेरणे। जठराग्नि प्रेरक।



बड़ी इलायची (बृहदेला)

उपयोगी अंगः बीज, फल।

रसः कटु, तिक्त।

गुणः लघु, रूक्ष।

वीर्यः उष्ण।

विपाकः कटु।

प्रभावः वेदना स्थापन।

दोष कर्मः त्रिदोष शामक।

वीर्य कालः 1 वर्ष।

मात्राः चूर्ण 1–2 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः आध्मान, यकृत्रोग, अर्श, शिरःशूल, मूत्रकृच्छ्र एवं वेदना प्रधान व्याधियों में प्रयोग।

रासायनिक संगठनः इसके बीजों में सुगन्धित तैल होता है। इसमें सिनिओल भी प्रचुर मात्रा में होता हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः हिमालय प्रदेश में एला के समान क्षुप, पत्र लम्बे, पुष्प पीताभ, फल गुच्छ, पत्तियों में विशिष्ट गन्ध, वर्ष के आरम्भ में पुष्प, शरद् में फल।

मुख्य योगः तृषाहर चूर्ण, ऐलादि चूर्ण।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : छोटी इलायची (सूक्ष्म एला)

वानस्पतिक नामः *Elettaria cardamomum* (L.) Maton।

वानस्पतिक कुलः आर्द्रक कुल Zingiberaceae।

गणः कटु, स्कन्ध, श्वासहर, अंगमर्द प्रशमन, शिरो विरेचन, (च०) एलादिगण (सु०)।

पर्यायः सूक्ष्मेला, एला, द्राविडी, त्रुटि, कोरंगी, चन्द्रबला, कपोतपर्णिका सूक्ष्मा।

भाषा नामः हि० छोटी इलायची, बं० छोटी एलच, म० बेलची, गु० एलची, ता० मेलाक्कू, ते० मेलाक्कपालु, मल० मेलम, कन्न० येल्लाकी, अ० काकुल, फा० हीलबक। **अं० नामः** Green Cardamom.

पर्यायः निरूक्ति।

एलाः एलायति, इल प्रेरणे, उष्ण गुण के कारण जठराग्नि को प्रेरित करती है।

द्राविडीः द्रविड देश भवा इति।

त्रुटिः त्रुटयति इति–कफादि नाशक होने से।

सूक्ष्माः सूक्ष्मा भवति ऐषा इत्यस्यात्सूक्ष्मा।

कोरंगीः कुरति शब्दायते इति कोरंगी। यह वातघ्न होने से अपान वायु को शब्दपूर्वक निकालती है।

उपयोगी अंगः फल, तैल।

रसः कटु, मधुर।

गुणः लघु, रूक्ष।

वीर्यः शीत, **विपाकः** मधुर, **प्रभावः** वातानुलोमन, **दोष कर्मः** त्रिदोष शामक।

वीर्य कालः 3 वर्ष, **मात्राः** 1/2–1 ग्राम, तैल 5–10 बिन्दु।

आमयिक प्रयोगः तृष्णा, अरोचक, छर्दि, उदरशूल, उदावर्त, श्वास, कास, बस्तिशूल एवं दाहप्रधान विकारों एवं घबराहट में उपयोगी।

रासायनिक संगठनः बीजों में उड़नशील तैल होता है जिसमें प्रधान रूप से टर्पीनेल एवं टर्पिनियोल होते हैं। यह तैल उड़नशील होता है। बीजों में स्टार्च, नाईट्रोजन युक्त गोंद एवं पीत रंजक द्रव्य पाये जाते हैं।

उत्पत्ति एवं स्वरुपः गुजरात, मैसूर, लंका, बर्मा में सर्वदा हरित, बहुवर्षायु क्षुप, पत्र एकान्तर फूल छोटे, दण्ड दीर्घ फूल ग्रीष्म, फल शरद।

मुख्य योगः सितोपलादि चूर्ण, एलादि चूर्ण।

JAYPEE BROTHERS

द्रव्य नाम : कटंकारी (छोटी कटेरी)

वानस्पतिक नामः Solanum surattense. Burm F. *Syn-Solanum xanthocardum (sehrd & windl)*।

वानस्पतिक कुलः कण्टकारी कुल Solanaceae.।

गणः कासहर, कण्ठ्य, हिक्का निग्रहण, शोथहर, शीतप्रशमन, अंगमर्द, प्रशमन (च०) बृहत्यादि, वरुणादि, लघु पंचमूल (सु०)।

सं० पर्यायः क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, दुःस्पर्शा, क्षुद्रभंटाकी।

भाषाः हि० कटेरी, भटकटैया, रिंगणी, कडियारी, म० भूईरिंगणी, गु० भोयरिंगणी, क० नेल्ल, ते० चल्लन मुलग, पं० कडियारी, ता० कंडनकर्तार, फा० कण्डाई खुर्द। अं० Yellow burried night shade. **अं० नामः** Indian night shade।



कटंकारी (छोटी कटेरी)

पर्यायः निरूक्ति।

कण्टकारीः कण्टकान् इयर्ति इति, ऋ गतो। खूब कांटो वाली होने से।

निर्दिग्धिकाः नितरां दिह्यतेस्य उष्णत्वादि गुणेः इति।

क्षुद्राः क्षुद्र कलाः स्वरूपा अस्या वा।

उपयोगी अंगः पंचांग।

रसः तिक्त, कटु।

गुणः लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण।

वीर्यः उष्ण, **विपाकः** कटु।

प्रभावः कण्ठ्य, **दोष कर्मः** वात कफ शामक।

वीर्य कालः 1 वर्ष, **मात्राः** चूर्ण 1–3 ग्राम।

आमयिक प्रयोगः नेत्राभिष्यन्द, अर्श, त्वग्रोग, आमवात में बीज, पत्र फल लेप। कास, श्वास, तृषा, अग्निमांद्य में क्वाथ अत्युपयोगी।

रासायनिक संगठनः इसके पञ्चांग में वसा तथा राल युक्त पदार्थ पाये जाते हैं। इसकी भस्म में पोटेशियम नाइट्रेट, कार्बोनेट एवं सल्फेट होते हैं। बीजों में हरिताभ, गन्धयुक्त तैल होता है।

उत्पत्ति एवं स्वरूपः प्रसरणशील क्षुप सर्वत्र बालू मिट्टी वाली भूमि एवं उष्ण जलवायु में, पत्र पक्षवत्, पुष्प बैंगनी, फल–पीत गोल, बीज अनेक, पुष्प काल ग्रीष्म। इसकी दूसरी जाति बड़ी कटेरी है।

मुख्य योगः व्याघ्री तैल, कण्टकार्यादिलेह एवं क्वाथ। निदिग्धिकादि क्वाथ, दशमूल क्वाथ।

विशेष उपयोगः श्वास, कास, शोथ एवं शूल में।

JAYPEE BROTHERS

for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejaypee.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.ejayp

द्रव्यगुण विज्ञान

(द्वितीय भाग)

(राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग के पाठ्यक्रमानुसार)

पुस्तक की विशेषता

- पाठ्यक्रम में दिए **100** द्रव्यों का सचित्र वर्णन।
- औषध निर्माता एवं चिकित्सकों के लिए आवश्यक अन्य **150** द्रव्य का भी वर्णन किया है।
- दोनों प्रकार के द्रव्यों का वर्णन आवश्यक बिंदुओं सहित किया है।
- ज्ञान के लिए जांगल एवं पार्थिव दोनों प्रकार के उपयोगी द्रव्यों का वर्णन किया है।
- नित्य प्रयोग-दुग्ध, आहार, धान्य आदि का भी वर्णन किया है।
- अंत में वन औषधीयों के फल, फूल, मूल आदि की विच्छेद रचना का विवरण किया है।

स्व० पं० रामदत्त जी शर्मा के सुपुत्र, **आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा** एम.डी. आयुर्वेद ने अपना आयुर्वेद अध्ययन वैद्य मुरारी मिश्र एवं वैद्य रामकृष्ण शर्मा जी के सानिध्य में नि० भा० आयु० विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की, **1968** से महाविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए आयुर्वेद के अनेक विषयों पर पुस्तकों का लेखन किया। **1980** में पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, पंजाब से एम.डी. आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर दिल्ली के मूलचन्द हॉस्पिटल में वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी के पद पर आयुर्वेद विश्वकोश तैयार किया जिसका एक भाग "पन्चकर्म चिकित्सा विज्ञान" चौखम्बा से प्रकाशित हो चुका है।

विगत **50** वर्ष से आप आयुर्वेद में लेखक, चिकित्सक, शोधकर्ता आदि के रूप में प्रसिद्ध हैं, आप के **200** से ऊपर अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लेख एवं **62** के करीब पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। सीसीआरएएस की पाँच पुस्तकों का आप हिन्दी अनुवाद कर चुके हैं। आपको अनेक मानद उपाधियों से सम्मानित किया गया है। आरएवी द्वारा आपको लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड एवं दिल्ली सरकार द्वारा 'वरिष्ठ नागरिक सम्मान' एवं **20** फरवरी **2025** को आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा, 'धनवंतरी पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

वैद्य ताराचन्द शर्मा के सुपुत्र **वैद्य मनोज कुमार शर्मा** ने चिकित्सा में प्रारम्भ से अपने पिता का सहयोग करते हुए इन्होनें सन् **1995** से फार्मेसी में कार्य आरम्भ कर दिया एवं समय के अभाव के कारण सन् **2013** में बी.ए.एम.एस उत्तीर्ण कर पिताजी के साथ चिकित्सा कार्य मे लग गये। रोहिणी (दिल्ली) एवं विभिन्न क्षेत्रों में सैकडों निःशुल्क चिकित्सा शिविरों में भाग लिया एवं निरन्तर शिविर लगाने के साथ पुस्तकों की पाण्डुलिपि तैयार करने में भी पूर्ण सहयोगी रहे हैं। आप भी नाड़ी परीक्षा में निरन्तर अग्रसर हैं। आपने अपने अनुभव से अपने पिता की पुस्तक लेखन में सहायक एवं लेखक के रूप में अनेक पुस्तकों में कार्य कर रहे हैं। त्रिफला, आयुर्वेदज्ञ जैनाचार्य चरित्रकोष, आयुर्वेदज्ञ कृतित्व परिचय कोष, सॉल्वड क्वेश्चन पेपर फॉर बी.एम.एस. **1st** ईयर आदि अनेक पुस्तकों में लेखक के रूप में कार्य करा एवं भविष्य की भी पुस्तकों में कार्यरत हैं।

वैद्य मनोज कुमार शर्मा के सुपुत्र **वैद्य अभिजीत ताराचन्द शर्मा** ने बचपन से ही आयुर्वेद के विभिन्न कार्यक्रमों में अपने दादा व पिता के कारण सम्मिलित होते रहे हैं। **2016** में बी.ए.एम.एस. के प्रथम वर्ष से ही लेखन कार्य में अपना सहयोग देना आरंभ कर दिया था। नव युवको को पठन-पाठन में होने वाली समस्याओं का ध्यान करते हुए पुस्तकों का नवीनीकरण करने एवं विषय को समझने के लिए टेबल, चार्ट्स आदि का निर्माण एवं सॉल्वड क्वेश्चन पेपर का निर्माण करने का सुझाव भी दिया। अभी तक **15** से ऊपर पुस्तकों में यह सहायक लेखक का कार्य कर चुके हैं एवं सॉल्वड क्वेश्चन पेपर फॉर बी.ए.एम.एस. **1st** ईयर **2nd** एडिशन जैसी पुस्तक में यह लेखक के रूप में अपना कार्य आरंभ कर चुके हैं।

Printed in India

Available at all medical bookstores or buy online at www.ejaypee.com

JAYPEE BROTHERS
Medical Publishers (P) Ltd.
EMCA House, 23/23-B, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110 002, INDIA
www.jaypeebrothers.com

Join us on facebook.com/JaypeeMedicalPublishers
Follow us on instagram.com/JaypeeMedicalPublishers

ISBN 978-93-6616-676-6